भा.पं.टी. 🐉 उत्तरत्रप्रव्हादचरित्रेमहापुरुषस्यगुणानांभाजनः आश्रयः दैत्यदानवकुलस्यतीर्थीकरणंशीलमाचरितंचयस्य फलसंकल्पेनव्यवधानशून्यश्रा 🐉 अ०१५ सावनन्यश्राव्यभिचारीयोभक्तियोगस्तेनउपास्तसवत ॥ । । विश्वस्यस्वस्तिप्रार्थनेखलस्यापिभवंत् तच्चसाधुपाडाविनाप्तस्य कर्माश्रयावितिपाठेरागादीन्रंधयिविदंह भूयिष्ठाः भूयाः ॥ ८ ॥ विश्वस्यस्वस्तिप्रार्थनेखलस्यापिभवंत् तच्चसाधुपाडाविनाप्तस्य कर्माश्रयावितपाठेरागादीन्रंधयिविदंह भूयिष्ठाः भूयाः ॥ ८ ॥ विश्वस्यस्वस्तिप्रार्थनेखलस्यापिभवंत् तच्चसाधुपाडाविनाप्तस्य कर्माश्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रविचित्रयावित्रविचित्रयावित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्रविचित्

हरिवर्षेचापिभगवान्तरहरिरूपेणास्तेतद्रूपग्रहणनिमित्तमुत्तरत्राभिधास्येतद्यितंरूपंमहापुरुषगुणभाज नोमहाभागवतोदैत्यदानवकुलतीथींकरणशीलाचरितःप्रहादोऽव्यवधानानन्यभिक्योगेनसहतद्वर्षपुरुषै रुपास्तेइदंचोदाहरित ॥ ७ ॥ ॐनमोभगवतेनरिसहायनमस्तेजस्तेजसेआविशविभववज्जनखवज्जदंष्ट कर्माशयान्रंथयरंथयतमोग्रस ॐस्वाहाअभयमभयमात्मनिभूयिष्ठाॐक्ष्मोम्॥८॥स्वस्यस्त्विश्वस्यखलः प्रसीदनांध्यायंतुभूनानिशिवंमिथोधिया॥मनश्रभद्रंभजनाद्धोऽक्षजआवेश्यनांनोमितर्प्यहैतुकी॥९॥ माऽगारदारात्मजवित्तवंधुषुसंगोयदिस्याद्भगवित्रयेषुनः ॥ यःप्राणवस्यापरितुष्टआत्मवान्सित्ध्यत्यदू रात्नतथेंद्रियप्रियः॥ १०॥ यत्संगलब्धंनिजवीर्यवैभवंनीर्थमुहुःसंस्पृशनांहिमानसम्॥ हरत्यजोंऽतःश्रु तिभिर्गतोंऽगजंकोवैनसेवेतमुकुंद्विकमम्॥ ११॥

हिंअगारादिषुमास्यात् किंतुभविद्ययेष्वेव अगारादिसंगदोषमाह य इतिइंद्रियियोग्रहाद्यासक्तः ॥१०॥ भगविषयसंगेगुणमाह येषांभगविषयाणांसंगात्लब्धंमुकुंद्विकमं श्रुतिभिःश्रवणादिभिः संस्पृशतांसेव मानानांपुंसामंतर्गतोऽजोमानसंमलंहरति कथंभूतंविक्रमम् निजमसाधारणं वीर्धवैभवंप्रभावातिशयोयस्य तीर्धतुगंगादि मुहुःसंस्पृशतामंगजं मलंकेवलंहरतितान्कोंवेनसेवेतेत्यन्वयः॥ ११॥

118311